



# महादेवी संस्मरण ग्रन्थ

संपादक  
सुमित्रानंदन पंत शांति जोशी

**लोकभारती प्रकाशन**

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१



श्री महादेवी जी को  
पण्डित-प्रवेश के शुभ अवसर पर  
सविनय समर्पित

पुखे - धार की धार अरु

अंधी की दृष्टि चले ।

जो इतिहे विर देवा दया अरु विचरनमे मे ?  
मुख छवि विचित्र दुई कला के हे विचारे ।  
विचरनमे के विचार विचित्र के  
अरु अरु अरु अरु ।

हय विचर अरुके का विचार धार अरुकेमे ,  
विचर अरुके के अरुके न लेके काही सोना ।  
के दुई अरुके अरुके अरुके  
अरुके के विचरके ।

अरुके लेके विचर-अरु दया अरुके काँचे ?  
हय अरु अंधी हरी अरुके विचरी के काँचे ।  
अरुके अरुके अरुके अरुके  
अरुके अरुके अरुके ।

मेमे मेमे के अरुके अरुके अरुके ,  
अरुके देवी नदी अरुके की अरुके अरुके ।  
विचर अरुके के अरुके, अरुके  
अरुके के अरुके अरुके ।

अरुके अंधी के अरुके चले ।

- अरुके अरुके

## विज्ञप्ति

श्रीमती महादेवी वर्मा २६ मार्च '६७ को साठवें वय में प्रवेश कर रही हैं। इस उपलक्ष्य में, साहित्यिक परिवार का अनंत मंगल-कामनाओं का प्रतीक, यह मस्मरण ग्रंथ उद्‌घोषित है। मैं उन साहित्यिक बंधुओं एवं लेखिका-लेखिकाओं का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने अपने स्नेह और सद्भाव द्वारा इस ग्रंथ की श्रीवृद्धि की है।

१८/वी-७ बस्तूरवा गांधी मार्ग

इलाहाबाद-२

—सुमित्रानन्दन पंत

इस प्रय के पारिधमिक की रागि  
प्रयाग विश्वविद्यालय के नियन छात्रो के कोप के लिये  
निर्धारित कर दी गई है। —स०

# अनुक्रम

## प्रथम भाग जीवनी

बचपन व दिन श्रीमती यामा देवी गवगना	३
जीवन चौकी श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय	१०

## द्वितीय भाग स्मृति-चित्र

हंगी, किरण और आम डॉ० रामकुमार वर्मा	२२
श्रीमती महादेवी वर्मा—एक स्मरण श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त	८
पहला गीत—पहले भेट श्री उपेन्द्रनाथ अदा	४२
श्रीमती महादेवा वर्मा—स्मृति चित्र डा० नगेन्द्र	५२
महादेवी न मिल ही ? श्री अमृतनाथ नायर	६२
श्रीमती महादेवी वर्मा—बुछ स्मरण श्री तरेन्द्र वर्मा	६७

## तृतीय भाग व्यक्तित्व

दो क्षेत्रा म गरम्बरी की आराधना श्री श्रीगणेशन तनुवंदी	७१
स्त्रानिमित्तानी, स्वतंत्र बुद्धि, नरन्यामयी डा० वासिष्ठ वृन्व	७७
जीवन का एक पक्ष डॉ० रामधारी मिश्र त्रिवार	८०
महादेवा जा प्रा० एतनाम हृमन	८६
एक मजल व्यक्तित्व श्री मगधरीकरण वर्मा	८८
महादेवी वर्मा—निवट म श्री इनाचन्द्र जाली	९२
पयवेक्षण और निमन्त्रण श्री गानिप्रिय द्विवेदी	१००
य गणक प्रतिमा श्री जालार नरद	१०६
तुम्हारी विज्जी यग हठी हैं श्री मर्णाहृण गालेग	११०
मोया महादेवा मुर्धा प्रीति जराण	११८
महादेवी जो—एक व्यक्तित्व मुधा गाली जाली	१२४

## चतुर्थ भाग काव्य

'दासिग्या महादेवा डॉ० हजाराप्रसाद द्विवेदी	१२९
--	-----



महादेवी वर्मा प्रा० चंद्रहासन	१३४
महादेवी का छायावाद श्री यगपाल	१३७
महादेवी जी की रहस्य-दृष्टि डॉ० भगीरथ मिश्र	१४१
महादेवी का वाक्य डा० इन्द्रनाथ मदान	१५३
महादेवी जी और मेरी आलाचना डॉ० रामविलास गर्मा	१५६
महादेवी की कला चेतना डा० कुमार विमल	१५९
महादेवी जी—नवमूल्यांकन डॉ० रामरतन भटनागर	१७३

## पंचम भाग चित्रकला

वह जगम त्रिवेणी हैं श्री राम कृष्णदास	१९९
महादेवी जी की चित्रकला श्री राममुनाथ मिश्र	२०१

•

सम्पादकीय सुमित्रानन्दन पंत	२१७
जीवन प्रमणिका की महत्वपूर्ण तिथियां	२२१
वृत्तियां तथा विशेष भाषणा का बालक्रम	२२४

## चित्र-क्रम

महादेवी जी की हस्तलिपि विनयि के सम्मुख	
महादेवी जी का चित्र प्रथम भाग के सम्मुख	
दीपक ( महादेवी जी की एक चित्र रचना )	द्वितीय भाग के सम्मुख
साहित्यकार समद भवन प्रयाग तथा प्रयाग महिला	
विद्यापीठ महाविद्यालय	तृतीय भाग के सम्मुख
रामयण म अपने गान्धे कुत्ता के साथ १९३६	
अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करन हुए पत जी	
जाचाय गितिमाहन सेन और निराला जी के साथ,	
१९४५ साहित्यकार समद भवन के उद्घाटन समारोह म राष्ट्रपति	
डा० गोरेन्द्रप्रसाद तथा राष्ट्रकवि मधिलीगरण जी के साथ	
साहित्य अकादमी का उद्घाटन म साहित्यकार समद भवन म	
भागनगल जी के साथ १९५०	
सुमद्रा जी के साथ पिता जी छाटी	
वहन और भाइयों के साथ	चतुर्थ भाग के सम्मुख
अस्था ( महादेवी जी की एक चित्र रचना )	पंचम भाग के सम्मुख





महादेवी वर्मा	प्रा० चंद्रहामन	१३४
महादेवी का छायावाद	श्री यशपाल	१३७
महादेवी जी की रहस्य-दृष्टि	डा० भगीरथ मिश्र	१४१
महादेवी का काव्य	डा० इन्द्रनाथ मदान	१५३
महादेवी जी और मेरी आलोचना	डॉ० रामविलास शर्मा	१५६
महादेवी की बला चेतना	डा० कुमार विमल	१५९
महादेवी जी—उबमूल्यावन	डॉ० रामरतन भटनागर	१७३

## पंचम भाग चित्रकला

वह जगम त्रिवेणी है	श्री राय कृष्णदास	१९९
महादेवी जी की चित्रकला	श्री गम्मुनाथ मिश्र	२०१



सम्पादकीय सुमित्रानन्दन पंत	२१७
जीवन प्रभणिका की महत्वपूर्ण तिथियां	२२१
दृष्टियां तथा विशेष भाषणा का बालक्रम	२२४

## चित्र-क्रम

महादेवी जी की हस्तलिपि	विनक्ति के सम्मुख
महादेवी जी का चित्र	प्रथम भाग के सम्मुख
दीपक ( महादेवी जी की एक चित्र रचना )	द्वितीय भाग के सम्मुख
साहित्यकार समद भवन, प्रयाग तथा प्रयाग महिला	
विद्यापीठ महाविद्यालय	तृतीय भाग के सम्मुख
रामगण्ड म अपने लाटल कुत्ता के साथ १९३६,	
अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करत हुए पत जी,	
आचार्य शक्तिमाहन सेन और निगला जी के साथ	
१९४५ साहित्यकार समद भवन के उत्पाटन समारोह म राष्ट्रपति	
डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा राष्ट्रकवि मधुलीकरण जी के साथ,	
साहित्य जवाहरी की बैठन म साहित्यकार समद भवन म	
मायनगाल जी के साथ, १९५२,	
मुमद्रा पी के साथ पिता जी छाटी	
वहन और भाई के साथ	चतुर्थ भाग के सम्मुख
अम्ना ( महादेवी जी की एक चित्र रचना )	पंचम भाग के सम्मुख







प्रथम भाग : जीवनी





## बचपन के दिन

श्रीमती श्यामा देवी सप्तसेना

परिवार में सात पीढ़ियाँ से केवल एक-एक ही लड़का जन्म ले रहा था। जब जिग्जी (महादेवी) हुई तो दादी ने दादा से कहा लड़की—भवानी हुई है। दादा सनकर प्रसन्न हो गए कि उनका एकमात्र पुत्र के प्रथम सतान लटकी हुई है। दादी से कहने लगे—मरे बड़े भाग हैं। यह देवी है, मेरे घर की महादेवी। दादा की आंतरिक प्रसन्नता अनंत थी—क्यादान की मन में कितनी आकांक्षा थी—क्यादान महादान। इस पुण्य से वचित उनके मन का बोना उदाम था।

बाबूजी बहुत सुंदर, मीठे, विद्वान और हँसमुख थे। जीवन उन्होंने रियासत में ही बिताया, इंदौर और नरसिंहगढ़ की रियासत में। पहले वे डेली क्लर्क, इंदौर में अध्यापन काय करने थे। तब वहाँ केवल राजकुमार पढ़ते थे। नरसिंहगढ़ के राजकुमार बाबूजी के गिण्ये थे। बाबूजी का वे बहुत आदर करते थे। जब वे नरसिंहगढ़ की राजगद्दी पर चढ़े तो उन्होंने बाबूजी से नरसिंहगढ़ आने का आग्रह किया। बाबूजी ने इंदौर-कलिंग की सरकारी नौकरी छोड़ दी, यद्यपि यह नौकरी अच्छी थी पेंशन वाली थी।

नरसिंहगढ़ और इंदौर, इन दोनों ही जगहों में गोदण नहीं खाया जाता था। किंतु बाबूजी गोदण के प्रेमी थे। वे गोदण खाते तो थे ही, राजा साहब के साथ गिणार के लिए भी जाते थे। माँ गोदण नहीं खाती थीं उन्हें परहेज भी था। अंत गोदण, बाबूजी के ही आदेश से, घर के बाहर, अहात की एक काठरी में, पकता था। गोदण पकाने और खाने के बतन अलग थे—बाली, बटोरा, पत्तीली। बाहर के ही कमरे में बाबूजी खाना खाते थे। माँ अपनी रंगाई से खाना मित्रवा दती थीं। वे बहुत बड़ियाँ खाना बनाती थीं—बाबूजी का उनके बनाए खाने में रस मिलता था। वे बड़ी-बेगम के भी बड़े प्रेमी थे। अक्सर चौके में आकर खाना खा जाते। घर के अंदर फूल की घाँटियाँ का ही प्रयोग होता था। बाहर की रंगाई एक बाहर के कमरे में प्याला-प्लेट, छुरी-काँटे का प्रयोग बजिन नहीं था। माँ को गोदण में परहेज अवश्य था, किंतु पिताजी अथवा भाइयों के खाने में उन्हें कभी कोई आपत्ति नहीं हुई। एक बार किमी ने मछली का गोदण भेजा। नौकर ने उसे घर के अंदर ही रखा दिया। जिग्जी ने देखा तो उन्हें घिन आ गई। माँ ने डाँटते हुए मममाया—जिम खोज को बाप भाई खाते हैं उमस तुम घिन करोगी तो उन्हें हजम कैसे होगा ?

माँ-बाबूजी दोनों का ही स्वभाव गिणार के दाँ बगारा-सा था, किमी भी बात में एक



दूसरे से साम्य नहीं, किंतु फिर भी एक-दूसरे की भावनाओं का इतना अधिक ध्यान रखते थे कि ग्राहस्थ्य जीवा सुखी और सफल था। बाबूजी सुन्दर, सूब गारे, माँ दीखने में सावली, मामली। माँ आस्थावान्, पिता, नास्तिक। माँ का संपूर्ण समय पूजा पाठ व्रत नियम आदि में बीतता था, वे घमपरायण था कमठ जीवन में विश्वास था। बाबूजी पढ़ने, शिवार खेलने घूमने के शौकीन थे, अच्छा भोजन और आराम से रहने में उनका विश्वास था। बाबूजी भाषण बहुत अच्छा दत्त थे। नरसिंहगढ़ में जब कभी सांस्कृतिक या धार्मिक आयोजन होते तो सदाजब उनसे भाषण लेने की प्रार्थना अवश्य करत। ईसाई, अण्डसमाजी या मनातन धर्मों किमी भी प्रकार का आयोजन हो, उन्हें बोलने के लिए आमंत्रित किया जाता और वे आमंत्रण का स्वाकार करते। बाबूजी पूजा पाठ में विश्वास नही करत थे, किन्तु उनका मिद्वान था कि दूसरे के विश्वास का चाट नहीं पहुँचानी चाहिए। माँ की आस्था तथा इच्छा का आदर करते हुए उन्होंने घर में मंदिर बनवाया और मयुरा से रामचन्द्रजी मीताजी तथा लक्ष्मणजी की मंगमरकी मूर्तियाँ मंगाकर स्थापित की। माँ तीन घण्टे नियमित रूप से भगवान का पूजा करती थीं। मस्ता समय था। नौकर चाकर गिर्यामत से मिलते थे। माँ का पूजा करने के लिए पर्याप्त अवकाश मिल जाता था। किंतु कई पूर्ण ऐसी भी होती जिन्में पति एक गृहस्वामी की स्थिति अनिवाय मानी जाती है। माँ बाबूजी से पहले दिन ही कह देता कि कल आपकी पूजा करनी है तथा विभिन्न विधियाँ का पालन करना है। बाबूजी उनकी बात मानते हुए कहते—अच्छा सबेरे पानी गरम करवा देना। बाबूजी का गठिया का रोग था जत नित्य या सबेरे नहाना व पसद नही करत थे। प्रति मास मत्वनारायण की कथा तथा उन पूजाओं में जिनके लिए माँ कहता व विधिवत बैठन, जो कुछ भी कहता वह करत आर फिर हँसत हुए हम लागा व पाम आ जात। उम समय के ईसाई मिशनरियाँ के हिन्दू धर्म विराधी वाक्याँ को दुहरा देते—

माला लकड़, देवा पत्थर गंगा-जमुना पानी।  
रामा, वृष्णा भरते दग्ने, सारा वेद कहानी ॥

एक बार बाबूजी मर्मर रूप से बीमार पडे। उनकी मरणासन्न स्थिति दत्त डाक्टर ने उनसे कहा—राम राम कहिए। पर वे कहन लगे—मैं भगवान् का नाम नहीं लूँगा, यह पूस देना है। एक-दो-तीन कहूँगा।

माँ की स्मरणशक्ति बहुत अच्छी थी। रामायण, महाभारत, गीता आदि के कई अंग उन्हें याद थे। विनयपत्रिका तो बटम्य थी। तुलसीदास जी की वे भक्त थी। राम चन्द्रजी उनके इच्छ थे। चन्द्र में रामजन्म के जवमर पर नौ लिंगा तब रामायण का पाठ दत्त भाँति करनी कि रामनवमी के दिन पाठ पूरा हा जाता—फिर घूमधाम व साथ रामायण और रामचन्द्रजी की आरता हाना और प्रसाद बँटता। जब हम दाना ( जिज्जा और में ) हम याद हा गण कि रामायण ठीक स पढ़ ल तो रामायण का पाठ करना हम दाना का

वाम हो गया। हम दोनों श्रम से परत—एक उठता तो दूसरा बैठता। मैं अथ देवी दक्षताआ, वृष्टि आदि से संबंधित धार्मिक ग्रंथ भी श्रद्धा से पढ़ती। बाबूजी धार्मिक पुस्तकें इधर उधर से मंगा कर उड़ते दंत और छाटा भाई उनके लिए रेकोर्ड ला देता।

मैं सबेरे चार बजे उठ जाता। स्नान आदि में निवृत्त हो पूजागृह में चली जाती और पूजा पूरी होने पर घर का काम देखती। लाले का एक बड़ा-सा स्प्रिंगदार पलंग था। बाबूजी उम पलंग पर हम बच्चा के साथ सोते थे—मैं बच्चों के मजसे छूटे बच्चे का ही अपने साथ मुलाती थी। बस नूनी नौकरानी लक्ष्मी की मैं हम बच्चा की देखभाल करती थी। सबेरे रामा नौकर स्टोव जलाकर चाय बनाता। सब बच्चा का पिताजी चाय आर दो दो हटले फामर बिस्कुट दते। चाय पीने के बाद हमलाग विस्तर आडत। मैं का यह पसंद नहा था कि बच्चा का सबेरे उठत ही चाय दे दी जाए। वे बाबूजी से कहता कि जब बच्चे बुलगा-दानुन करले तब उह कुछ खाने का दीजिए। बाबूजी हमें दते—  
 खेर बुलगा-दानुन कगता है ? मेरे बच्चे खेर हैं।

हम दा कहनें बड़ी थी, उनके बाद दो भाई। पहना में लडाई कभी नहीं हुई। हाती मैं वैम ! जिज्जा का गगत, गनीर स्वभाव। बटे भाई का भी वैसा ही स्वभाव। लडाई मुगम और छटे भाई में हाती थी। दादा ही चल गगरती। छाटा हठी और अपने मन का है। एक बार पिताजी ने हम चारा के लिए चार आमन बनवाए। जब जेल में आमन न कर जाए ता पिताजी ने कहा कि पहल महादवी का अपनी रचि का आमन चुनने दो। जिज्जा ने एक आमन—सबसे अधिक कलारभव आमन—चुन लिया। मुझे जाय बने भाई का इगम बाद आपत्ति नहा हुई। पर छाटा भाई विगम गया—नहीं मैं तो जिज्जा वाला आमन ही लूंगा। किंतु बाबूजी ने उसे वह आमन देना जस्वीकार कर लिया। उनका कहना था कि यह विगम आमन मैंने महादवा की रचि का ध्यान में रख कर बनवाया है। छाटा भाई उम समय तो लड झगडकर चुप हा गया पर उसने मन ही मन उम आमन का प्राप्त कर लेने का निश्चय कर लिया। जिज्जा का खिना और तमक से घिन थी। पिता चम्मच के बड़े हूँ छूता नहा थी। छटे भाई ने आमन पर एक मुट्ठी खिनी रगन दो और उम प्राप्त कर लिया।

हम चारा भाई-बहन रामा नौकर के साथ जबकिर पहाड पर घूमने जात। रामा हम लागा ता बहुत ख्याल रखता, किंतु साथ ही डाँटता, चिंता और बहद तग करता। बरमान के दिन थे। हम लाग पहाड पर चर रहे थे। दा चट्टानों के बीच एक सफेद फल दागा। रामा बाग—यह क मूल फल है। इस ही ऋषि मुनि खात थे। हम लागा ने जब उताया बड़ी विरोधा की तब वह उम फल का तोरने के लिए तयार हुआ। वह फल तदित। गार्म और चतुर्गई का काम था। दा चट्टानों के बीच भाई, जरा पेर फिदल ता पता भी न रत। किती तरह पेट के बल फिमटते हुए रामा ने वह फल तादा करने के पानी से धाया और सबका भाँगा। खाने में वह फल मीठा था। किंतु धाया ही दर

मर्जीम म चिरोगे वाटने की अनुमति और लार का टपकना ! किसी तरह हम लौंग घर पहुँचे । सत्रका मुह इतना अधिक सूज गया था कि बोलना असम्भव हो गया । पिताजी ने दया । तत्काल सिविल सजन का बुलाया, इलाज हुआ । चार दिन तक कोई विस्तर नहीं छाट पाया । पिताजी ने जब सब विस्सा सुना तो रामा को बहुत डाटा । पर वे उस प्यार भी बेहद करत थे । उसकी इमादारी क प्रशंसक थे ।

मा और पिताजी दोनों को ही गाने का बड़ा शौक था । उस समय परदा बहुत था । पिताजी मास्टर रख कर माँ को गाना नहीं सिखा सकते थे । जत उहाने अपने लिए मास्टर रखा और हारमोनियम पर गाना सीखने लगे । मा परदे के अंदर से गाना सुनती एवं सीपती । मास्टर साहब के चले जाने पर वे हारमोनियम पर उनका सिखाया हुआ भजन सुना देती । साल भर के अंदर ही वे मध्व स्वर निवालने लगी, सभी राग रागिनियाँ हारमोनियम पर उतारने लगी । वे ठेरा गाने सीख गई । सबेरे चार बजे मा प्रमाती अवश्य गाता । 'तू दयाल दीन हूँ और 'नमामी गमी शाम ' उनका प्रिय भजन थे । माँ इतनी सुन्दर लय म गाती कि पिताजी भाव विभोर हो जाते । जिज्जी के कुछ गीतों में मस्कार एवं वातावरणवग माँ के गीतों की लय मिलती है । उनके 'हुए फूल चदन ' गीत म 'नमामी गमी गाम का ही छंद है । एक बार मा होली म गा रही था—'लाल भयो नदलाल, श्यामता रग गयो है ' । आगे की पकितियाँ व मूल गई । अपनी बड़ी बेटी से उहाने कहा ता बेटी ने पकितया बनाकर जोड़ दी—

लाल मुकुट मिर लाल पीताम्बर, लाल गल बनमाल ।

राधे लाल, मली सब लाली सुंदर नैन विशाल ।

जिज्जी ने ऐम ही चार अतरे बनाए । फिर माँ जब कभी बारहमासी, होली, लोकगीत आदि जिमकी मा पकितियाँ मूल जाती—जिज्जी से कहती और वे बना देती । जिज्जा का कविता लिखना इसी भाँति प्रारम हुआ ।

राबजी का परिवार-केन्द्रित स्वभाव ! बाहर जाना वे परिवार क साथ ही अच्छा मानत थे । राजा साहब के यहाँ या काम से कहीं जाना हुआ ताबत दूसरी है जयथा व माँ या हम लागा क साथ ही बाहर निवर्तत थे । वे अपना अधिकांश समय घर महीं बिताते थे । हम लागा के साथ बैठ कर उसी मजाक करना उह प्रिय था । दावता में भी, यदि उठ हा आमन्त्रित किया जाता ता वे नहीं जाते । नरसिंहगढ़ की औरतें परदा करती थीं माँ स्वयं भी परदा करती थीं, जत बाबूजी हम बच्चा को ही घुमाने ले जात । हम लाग दहाता म जात कभी बग्घी में कभी हाथी पर और कभी पैदल ही । बाबूजी का विण्टर देगने का यडा गोक था । इंदौर, नरसिंहगढ़ दाना ही जगह विण्टर कम्पनियाँ आती था । बाबूजा हम बच्चा क साथ विण्टर देगने जाते—'कला-भजनू, शीरा फरहाद, मुने-हव । एक बार माँ को भी आग्रहपूर्वक ले गए । विण्टर देखने क बाद व बड़ी दुःखी हुई—भक्ति और

म के पिण्डर दबने चाहिए और तुम दुश्मनी के देखते हो, बच्चा को भी दिमाग हो।  
 मरी बार पिताजी उन्हें सूरदास लिखाने ले गए। वे बड़ी प्रसन्न हुईं—भक्ति भाव में डूब  
 ड। फिर पिताजी धार्मिक पिण्डरा को देखने ही जाने लगे। गतिद्वार की गम हम  
 व गम मीरा, मत्स्य हृदिचंद्र, भवन प्रह्लाद जादि पिण्डर देखने जान।

बाबूजी लड़किया की शिक्षा का आवश्यक मानते थे। जब हम लोग बटे हुए ता  
 उहाने कहा कि मेरे बच्चे मध्य प्रदेश के जगली इलाके में बिगड जाएंगे। उन समय स्त्री-  
 गता के दो ही म्यल थे—इगहावाग म द्रास्यवेट गल्स कॉज, और जालघर में बया  
 हाविद्यालय। पिताजी इनमें से किसी एक विद्यालय में भेजना चाहत थे किंतु माँ ने तीव्र  
 बराध किया—देखा, पढ़ाना-बढ़ाना पीछे, पढ़ते में लड़किया को घर का काम सिखा लू।  
 १००० रुपये गृहस्थी चलाना उह नही आ सकता। बाबूजी का माँ के टट स्वर के आगे  
 गत माननी पटी। फिर भी उहाने पूछा—प्रशिक्षण में कितना समय लगेगा? माँ ने  
 उमी म्त्र म कहा—जब सिखा लूनी, बताना दूगी। और लड़किया की शिक्षा प्रारंभ हुई  
 श्रंगत की पुनर्दि म। दो चमारिने शिक्षक बन कर जाई। गावर मिटटी आगत म डायी  
 गई। जिज्जी ने मुदर आगत लीप कर लिखा दिया। फिर एक बोरा गेहूँ आया। माँ का  
 जादग था—पटवना सीमा, यदि सास ने कहा तो क्या बरागी। सैर गहरे पत्रवना भी मीन  
 लिया। फिर माना बनाने की शिक्षा माँ ने स्वय दी। वे चिमटा लेकर पाम ही बँठ जाती।  
 बरा भी भूल हो जाने पर चिमटा लिखाबर डटती। डोट जिज्जी का ही भहनी पडती,  
 यही शोने के कारण। कुगाप्र बुद्धि के कारण वे बहुत जल्दी सब काम सीन गइ। मैं ता  
 कुछ भी ठीक संनहा गोम पाई, किसी काम में गमीरनापूवक मन गगता तब न। जिज्जी  
 ने छार्टी-मी आयु म बडे, पकौंगी, बटी, पराठा, रोटी, तरबारी सब कुछ बनाना माग लिया।  
 उनकी मा रागी बिन्ने ही बना पात हागे। उनकी भी माल की आयु हागी जब छाटे नाई  
 की छुट्टी में मपूण गाना उहाने बनाया। माँ प्रसन्न आर सन्तुष्ट हो गइ। दाना लड़किया  
 को खेल-बूद और पन्ने की स्वतंत्रता मिल गई। मैं तो किसी काम को कुगागनापूवक मीन  
 नहीं पाई—माँ का परासक मन जिज्जी के कामा की आर ही अधिक ध्यान दना। और  
 य सब काम इननी महजना तथा दायित्व व माय पूरा कर देती कि हम गगाकी प्रशंसा हो  
 जानी। जिज्जी सफाई की प्रेमी हैं। उनका कामा बपडा कमरे एक-एक बात म  
 गपार्द एक स्वच्छता ही अभिव्यक्त होती। उनका अध्पन प्रेमी स्वभाव अधिकतर उन्हें  
 उनके बगरे छ बाँध रगता जहाँ के शत्रु वातावरण म वे पन्ती रहता।

होगा हमारे परिवार का गुण है। हम मनी बहन माँ गित्गित्गार होंग मवन  
 हैं। यह गुण, मनवत, हमें अपनी योगी संमिला। हमारी एक ही ता मीनी हैं और  
 उनका जावन बट का अयाह मागर रहा है। उन समय भी, जब कि जगह्य दुग व  
 नाग म काइ दूगग हाता ता बाल भी न पाता, वे अपनी धानपति व जावन उग सं  
 गवका प्रसन्न कर देती और हँसी का शान उनकी बात-बात म फूट पता।

माँ की अनुमति मिलने पर बाबूजी ने सस्कृत पढ़ाने के लिए एक पण्डितजी रंग दिए, साथ ही जंगेजी पढ़ाने के लिए मास्टर साहब गाना मित्ताने के लिए संगीतन और चित्रकला के लिए एक कलाकार । हमें सारी शिक्षा घर में ही मिलती । बाबूजी स्वयं यान रखने कि वच्चे ठीक स पठ रहे हैं, उत्तति कर रहे हैं जादि । शिक्षा के क्षेत्र में माँ जिज्जी मुससे आगे चल गई । उनकी तीव्र बुद्धि पढ़ने में रुचि, सब कुछ जल्दी सीख लिया । गनी साहब नरमिहगढ़, गिबकुमारी महारानी जिज्जी के नाम आर कविता प्रेम से बहुत प्रभावित था । जिज्जी से जायु में बढी होने पर माँ के जिज्जी को अपनी सहेली मानता । वे स्वयं माँ कविता करती थीं—कविता की प्रेमी थी । जत्र तब अपनी माटर भेज कर वे जिज्जी का दुल्बानी । माँ हम दोनों का भेज देता । जिज्जी जीर रानी साहब महल क पुस्तकालय में बठ कर पढ़नी या काय चर्चा करती और मैं महल के अंदर घूमती रहती । चादी के पत्ते आदि बहुमूल्य वस्तुएँ देखने में आनंद लेनी । कईबार गनी साहब का जिज्जी के लिए सनेरे ही पान आ जाना—मैं रात को कविता लिखी है । काय भज रही हूँ । जल्दी जा जाया । जिज्जी अपनी काव्य मया से मिलने के लिए उत्सुक हो जाती और मैं महल में घूमने के लिए ।

कायादान की दादा की आबुल प्रतीमा थी । नौ साल की लडकी, राहिणी का दाता । महापुण्य उपाजन का साधन । दादा ने इस पुण्य का प्राप्त करने के लिए जिज्जी की शादी ठहरा दी । बाबूजी इतना जल्दी लडकी का ब्याह नहीं करना चाहते थे । वे उच्च शिक्षा का आवश्यक मानते थे । किन्तु दादा की आतंरिक इच्छा के प्रतिबूल जाना, उह आघात पहुंचाना उह उचित नहा लगा । अतः जिज्जी को दसवा बप लगा ही होगा कि उनका विवाह हो गया । दादा ने कायादान किया । ग्यारहवा बप लगते न-लगते माँ ने उन पर परते का प्रतिप्रथ लगा दिया । व घर में ही रहता । पढ़ना लिखती, मंदिर घाता, घर का काम दपता । जिज्जी की साम थी नहीं, समुं थे । उनकी माँ शोध ही मत्यु हा भई । जीजाजी स्वरूपनारायण दमकी कक्षा के विद्यार्थी थे । बाबूजी ने जीजाजी को अपने पास रूला लिया । इटर करा कर उह लगनऊ के मेन्विल कलिज में बोर्डिंग में रख दिया जहा में उहाने डाक्टरों में योग्यता प्राप्त की । जिज्जी की शादा करने के साथ ही बाबूजी ने अपनी बडी बेटा की मनावति पर ध्यान लिया वह विठ्ठल सत्य थी, अपने ही मनन अध्ययन में लगन । बाबूजी अक्सर बहा करत थे—महादेवी नभानत पसद, नाचुव मिजाज लडकी है । अपनी लडकी क दिन प्रति दिन के व्यवहार से उह लगने लगा कि इस अल्प आयु में लडकी की शादा करके उहाने महान् भूल की और वह इस जीवन का सुखभूख नहा अपना पाएगी । बाबूजी ने अपनी भूल क प्रायश्चित्त स्वरूप, उम समय क मदम में एक महान निणय ले लिया । वे अपनी बेटा और दामाद को अलग-अलग रक्केंग ताकि वह पयकता की साई एक दूमरे को मनानुबूल जीवन जीने द । बाबूजी ने प्रायश्चित्त बोर्डिंग हाउस में हम दादा बहना को भेजने का निश्चय कर लिया । परित्रारवाला ने मुना ता बडा विरोध किया—बया बेटा की कमाई साएंग ?

बाबूजी स्वयं हम लोगो को इलाहाबाद छोड़ने आए। माग एव स्टेशन पर अनेक अपगु लोग मिले। मैं सदैव कहा करती थी—बाबूजी मुझ माँ का रग आया, मैं वाली हूँ। बाबूजी को यह सुनना बुरा लगता था। व मेरे बहने का प्रतिवाद करते हुए कहने— नहीं, माँ वाली नहीं है। देगती नहीं हो दा रग का गेहूँ होता है, मफेंद और ललछौंह। माँ का ललछौंह रग है। स्टेशन पर जब लूले, लँगटे, अघे, बाने लोग मिले तो बाबूजी ने मुझसे कहा—तुम इन सबसे मुदर हो। रंग को घयवाद दा व तुम्हें अच्छा बनाया है। 'सौ से बुरा तो एव न बेहतर बना लिया।' बाबूजी गम्भीर स्थिति को समझने बाटे और गुटे दिर के व्यक्ति थे, जिहाने सदैव अपने बच्चा के बल्यण को ध्यान में रखा। हम लागा के होस्टल में प्रवेश करने के लिए ही मानो दादा का जिज्जी को दिया हुआ नाम 'महाशेवी' प्रतीक्षा कर रहा था। इसने जिज्जीके लिए म्यतत्र आत्म निमर जीवन का माग उमुक्त कर उनसे बाध्य के उन गाश्वत मत्य का वरण करवा दिया जो उनके जीवन की सामकता है।

[ एक भेंट-वार्ता के आधार पर—'गानि जोसी ]



## जीवन-झाँकी

गंगाप्रसाद पाण्डेय

होली भारतीय त्योहारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और व्यापक पर्व है। इसे घरती वा निजी उत्सव कहना चाहिए। घरती के रूप, रंग, रस, गंध होली में सजीव और गहज ही यौगनित हो उठते हैं। रसाल की मधुमाती मजरिया फागुनी वातावरण में मूम मूम वर विदव प्राणा में मादवता का मचार करने लगती है। मधुम रममार से घरती पर चू पडत हैं। अतमयी नवीन फसल आत्म-समपण द्वारा मानवीय जीवन माधना में तपित का उपहार लेवन उपस्थित होती है। चतुर्दिव रंग रग और उल्लास की पिचकारियाँ छूटने लगती हैं। घरती और आवाग अवीर गुलार से अनुरजित हा उठते हैं।

फाग रंग की सरस स्निग्ध तरंगा में सारा जीवन तरंगित होने लगता है—यही तो होली है। सबसे बडकर यह कि इमी दिन से हमारा नया सम्बत प्रारम्भ होता है। पौराणिक कथा के रूप में ही होला प्रह्लाद (प्रकृष्ट आह्लाद) की रक्षा और पृतना (जा पृत नहा है) का जन्तक दिन है। इन प्रकार सामाजिक-माधुतिक दष्टि से होली की अपनी महिमा और विनोपता है।

इसी रंग रगमय मगल मडित दिन को माहित्य की देवी—महादेवी का जन्म सम्बत १९६४ में फहनाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। जन्मदिन की यह रगमयता जाग सावज नीनता उनके ब्यक्तिरत्व और कृतिरत्व में सप्रिहित है। जीवन एव साहित्य के पट में इतने विभिन्न रंगी सूता का सम्मेलन महज ही नहीं मिलता। रहस्यवादी कवि, यथाथवादी गद्यकार तथा सम-व्यवादी आलोचक होने के साथ-साथ वे अद्वितीय रंगा चित्रकार सास्मरण लेखिका, सामाजिक एव ललित निबन्धकार, उच्चवादि की चित्रकर्त्री और परम प्रबुद्ध समाज तथा राष्ट्र सविका भी हैं। उनके रचनात्मक कार्यों के प्रताक प्रथम महिला विद्यापीठ और साहित्यकार समद के अतिरिक्त अनेक सस्यार्ये और पाठशालायें हैं। विशेषता यह है कि इन रुमी क्षमा में उनके ब्यक्तिरत्व की अलण्डता सवथा अशुण्ण है। इस दष्टि से वे कवल भारत में ही नहा, विश्व भर में इतनी विराट आर व्यापक प्रनिमा की अवेली कलाकार हैं।

आवाग ममी प्रकार के आलोका और रगा का आधार है। यदि आपने कभी स ध्या का जावाग दया है तो महादेवी जी की इन पविनया का रग परगिए—आवाग और कवयित्रा का तात्परम्भ दगिए—

प्रिय माध्व गगन मेरा जीवन ।  
 यह क्षितिज बना घुघला विराग  
 नव अरुण-अरण मेरा सुहाग  
 छाया भी बाया वीतराग,  
 मुधि नीने स्वप्न रंगीले घन,  
 प्रिय साध्व गगन मेरा जीवन ।

महादेवी जी माँ-बाप की पहली सतान हैं। रुद्रिप्रस्त नारतौप समाज में आज भी, पर आज के पचास वष पहले तो निश्चित रूप से प्रथम ब्या-गाम गुन या मुन्द नही माना जाता था। महादेवी जीने स्वय इसका उल्लेख किया है—'जैम ही दवे स्वर केलदमी के आगमन का समाचार दिया गया वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे तक एक दृष्टि निरागा व्याप्त हो गई। बड़ी-बड़ियाँ सकेत से मूक गाने बालिया का जाने के लिये बह देनी और बड़े-बूढ़े झगरे से नीरव बाजे वाला को विदा देते—यदि ऐसे अतिथि का नार उठाना परिवार की गकिन से बाहर होना, ता उन बँरंग लौटा देने के उपाय भी महज थे। मौनाग्य में इनका जन्म बनी प्रतीला और मनोनी के पदचान हुआ। इनने बाबा ने इम अपनी बू देवी दुर्गा का विशेष जनुग्रह ममगा और आदर प्रर्णन करने के लिये नाम रखा—महादेवी। सावनवार को यह उक्ति—मौ मो पुत्रा न नी अधिब जिाकी पुत्रियाँ पूतनीग वाम्तव में राजा जनक की पुत्रिया के लिये जिननी सायब है, उननी ही श्री गाविन्द प्रताद की पुत्री महादेवी के लिये नी।

महादेवी जी का वाध्व बरणा-बलित-अधूमित है। पैदा हाउ ही रोउ ता मब बचने हैं पर इनकी रोने की अद्भुद आदत। माँ—हैमगनी देवा आम्निव स्वभाव की मागनीय नारो होने के कारण पनि का मिगाने पिगाने का बाप नौकरा पर न छाउ कर स्वय बरना चाहती थी और महादेवी जी इम बीच रो रोकर बागहल मचा देती थी। माँ ने विवगना में परम्परा प्रबलित अफीम का महज सम्बल ग्रहण किया। अफीम गिलाया और झूले पर पने पूरने पर डाल दिया। वे अपनी दैनिकी में व्यस्त हा गई और बालिका ने बल्पना-गाम की सैर की।

अफीम-मिवा के हाति जो भी हुई हा। पर प्रत्यक्ष साम यह हुआ कि अय गिगुआ की अयोगा इनका विबाय गोष हुआ। तीन वष की अवस्था में ही जाम की पाल में मार चुन लेने में आप निगुा हा गईं। बणमाला ज्ञान के साथ ही नाई-बहन का चिराने की बला का प्रदशन करने लगा।

पाँच वष की होने-हाने आप का भोपाउ तथा इन्दौर की माया भी बरनी परो, जहाँ 'अतीत व चर्चित्र का गमा इहें मिला। छोटे नाई की म्पया में गाम-राम-रुद्र नेर व डाग रामा की आप किग तरह केवल अपने ही लिये राजा बहने का बाप्य कर देनी थी, दगकी भी एक राचक बहानी है। अब-पा की प्रगति के माप-माप जीवन विस्तार

महादेवी-नारमरण-पथ



की छाया में यह कला-बुगलता घर की सीमा से निकल कर बगीचे के फूल और पड़ोसिया के घर तक पहुँच गयी। गसाल और फूल का यह आवरण कलात्मक रचि का प्रतीक माना जाय तो राजा कहलाने का हठ पुष्प के साथ समानाधिकार का बीजारोपण। इंदौर में पूणत व्यवस्थित होने पर मा ( जिज्जी ) ने चाहा कि बेटों को कुछ समय खिलौना में उल्टा रखें, कुछ समय गह-भाय की शिक्षा दें और यदि यह सब न हो सके तो पाटी पकड़ा कर स्कूल ही भेज दें। महादवी जी इन चक्करो में गहा पडना चाहती थी। उनको ता फूल, तितली, हरी दूब और फग या दोबाल पर कुछ उरहेने के लिये कोयला और सिंदूर के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए। माँ-बाप के लिये एक परेशानी। छोटी बहन और भाई की ओर सकेन करत हुये जिज्जी ने कहा—'खेलना छाटा का काम है, बडा का पटना या घर का काम करना।' इन्होंने पटना पसंद किया ता आश्चय नहीं।

आय-ममाजी सस्कारा के साथ आप का मिशन स्कूल में भरती कर दिया गया। घर में हिंदी, उर्दू, चित्रकला और सगीत की पढाई का प्रबंध हो गया। जिज्जी ने किञ्चित डोटकर कहा—अब मास्टरा में छुट्टी लिये बिना घर से बाहर मत जाना। पढाणी नहीं ता घर में चुपचाप बठी ता रहाणी।

पढाई प्रारम्भ के प्रथम दिन ही आप धोनी देर तक अध्यापक के पास बठी रही और फिर छुट्टी की माँग पेश की। आवश्यकता पूछने पर उत्तर दिया—'फूल ताड लाऊ नहीं ता माली ताडकर बाबू (पिताजी) के गुल्दस्त में रगा दगा, जहाँ वे सूख जात हैं।' 'ता क्या तुम्हारे तालने से नहा सूखत?' 'मूखने ता हैं पर भगवान् जी पर चढ़ने के बाद। फिर जिज्जी उह नदी भेजवा देती हैं। माली उनका कूड़े में फक देता है। और बाबू बीनने भी नहीं देने।' प्रश्नोत्तर से पडित जी इतने प्रसन्न हुये कि उहाने तुरत छुट्टी दे दी। घोर-घोर पडित जी का पात हुआ कि बालिका केवल वातचीत में ही नहीं पढने में भी प्रवीण है। लडकियाँ और हो ही क्या सकती है लडाकू या पढाकू। महादवी जी ने दोना रपा का अपनाया है। लडाकू रूप उनके विद्रोह और नारी विषयक निबन्धा में मुखरित है और उनका पढाकू रूप ता जग जाहिर है ही। जा भी हो, गणव में पढाई की अपक्षा आपका इधर-उधर ऊषम मचाना ही अधिक् प्रिय था।

रामा नामक रगाचित्र में महादवी जी ने अपने बचपन की अनेक मनारजक घट नाजा का अंकन किया है जिनमें उनके स्वभाव और उनकी प्रबुद्धता का पता चलता है। दगाहरे के मेले में खिलौने खरीदने के लिये रामा ने एक का बंधे पर बिठाया और दूसरे का गाल में ल लिया। महादवी जी का उँगली पकडात हुए बार-बार कहा—'उँगरिया जिन छोडिया गजा भइया।' मिर हिलात हुये स्वीकृति दन-दने ही इन्होंने उँगली छाडकर मेला दगने का निश्चय कर लिया। मटकत मटकते और दबने से बचते-बचते जब इहें मूस लगी तब रामा का स्मरण अनिवाय हो उठा। एक मिठाई का दूबानपर सडे हापर अपनी उडिगता का छिपान हुये इहाने मरज भाव से प्रश्न किया—'क्या तुमने गमा का देसा है ?

वह सा गया है।' हृत्वाटने वाल्मव्य मुग्ध हाकर पृष्ठा—'कैसा है तुम्हारा रामा ?' इन्होंने आठ दवा कर मताप के साथ कहा—'बहुन अच्छा है'। हलवाई इस उत्तर से क्या ममयता ? अतत उमने जाग्रह के साथ विश्राम करने के लिये वही बिठा लिया । 'मैं हार ता मानना नहीं चाहती थी, परन्तु पाँच थक चुके थे और मिठाइया से सजे घाला म कुछ कम निमनषण नहीं था । 'मी मे दूकान के एक काने म बिछे टाट पर सम्माय अनियि की मुद्रा में बैठकर मैं बूढे में मिठाई र्पी जध्य का स्वीकार करने लये उस अपनी महान यात्रा की क्या सुनाने लगी ।' मध्या ममय जय मयमें पृष्ठन-पूछत बडी बठिनार्दे से रामा उस दूकान के सामने पट्टेवा तव इहाने विजय-गय से पूरुवर कहा—'तुम इतने बडे हाकर भी सा जाते हो रामा ।'

एक बार जब आप केवल मात वष की थी, पडाम म किसी आबारा कुत्ती ने वच्चे दिये । जाडे की रात का मनावा और टाटी हवा के सन-सन शौंदा के साथ पिन्ला की कू व की धरति कर्णा का ऐसा मत्तर करने लगी जा महादेवी जी के कोमल हृदय के लिये अमहम हो उठी । बेचनों के साथ आपने कहा—'बटा जाटा है पिल्ले जडा रहे है । मैं उनका उठा लानी हूँ, मवेरे कहा ग्व दूगी । चला, चला, मरो अच्छी जिज्जी । अम्बीकृति की सूचना पात ही आप जार जार से रान लगी । माग घर जग गया और अत म पिन्ल पर गये गये । उनके इस स्वभाव म आज भी काइ परिवतन नहा हुआ । एमे अनियि जीव-अतुजा म उनका घर जब भी प्राय मरा रहता है ।

इस कर्णाजनित स्वभाव के कारण जीवज और जगत की किस कर्ण स्थिति में उनका हृदय का स्पन्दन घटित नहा ? सामने आइहुद किस रगता को व अपनी सहज म्निगपता से मग्म नहा कर दना चाहती ? एमी कान मी पापाणी कठारता ह जा उनकी मूलाधार कर्णा व र्णों म बाप नगा उठनी ? मत्य आर ममूह की रगा के लिये विदाह की किस ज्वाला का उहाने अपनी त्यागमयी तपरया की जाँच नहीं दी यह बटा मबना बठिन है ।

उमा अवस्था मे पूजा-आरती व समय माँ से मुने हुये मीरा, तुलसी आदि के तथा उनका स्वर्गचिन्त पदा के मगत पर मुग्ध हाकर इहाने पद रचना प्रारम्भ कर दी थी ।

बाध्य की प्रथम गिगु रचना का प्रारम्भ गान वष की अवस्था में इस प्रकार हुआ था—आआ प्यारे तार आआ, मेरे जीवन म बिछ जाआ । कितु इसके बाद की लिखी पूरा रचना ममस्यापूर्ति ही है —

आगम है तिन नायक का, अरनाइ मरी नम की गलियान म  
मीरा मुम बत्राम बगी, मुम्नान नद बगरी बलियान म,  
मग घुनी बिरदावगिया अब गुजिन है सग श्री जगियान म,  
यागन व हिन बज-नगा मुकूठाहल जोरि र्पी जगियान म ।

प्रयाग परने आन के लहे म ही आप 'मग्मवनी पत्रिका में परिचित हा चुकी

थी। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की बहिताए भी देग चुकी थी। बालने की माया म बहिता लिगने की सुबिधा इहें आकषित करने लगी थी। वस्तुत इन्हाने 'मेघ बिना जल बृष्टि नई है' को खडी बोली म इम प्रकार रूपांतरित कर दिया—

हाथी न अपनी सूड में यदि नीर भर लाता अहो,  
ता किस तरह बादल बिना जल-बृष्टि हो सकती कहो ?

'अहो' और 'कहा' देखकर ब्रजभाषा प्रेमी आपके अध्यापक पंडित जी ने कहा— 'अर ये यहाँ भी पहुँच गये' ? पर आपने इसे अनसुना कर दिया और ब्रजभाषा छानकर खनी वाली को अपना लिया।

खडी बोली की प्रथम पूण रचना जो आपके आठवें वष म लिखी गई थी जोर जिगना गीपक 'दिया' है, यह है—

धूलि के जिन लघु कणा म है न आमा प्राण,  
तू हमारी ही तरह उनस हुआ वपुमान।  
आग कर देती जिसे पल म जलाकर क्षार,  
है बनी उस तूल से बर्ती नई मुकुमार।  
तल म भी है न आमा का कहा आनास  
मिल गये सब तत्र दिया तू ने जसीम प्रवाण।  
धूलि से निर्मित हुआ है यह शरीर ललाम,  
जोर जीवन-वृति भी प्रभु से मिली अमिराम।  
प्रेम का ही तल भर जा हम बने नि शक,  
ता नया फले जगत के तिमिर म आलोक।

इसी समय एक ऐसी घटना घटी जिसने महादेवी जी का इतना प्रभावित किया कि व उस वचना से कभी मुक्त नहीं हो सकी। नौकर ने पत्नी का इतना पीटा कि वह लहू-लुहान हावर रानी हुई जिज्जी के पास दौड आई अथवा वह उस मार हा डालता। गनिणी स्त्री के लिये काम-बाज मारी बाण और ऊपर से ऐसी मार ! जिज्जा ने महानु भूति क साथ उमकी गाथा सुनी और नौकर का डाँटा फरकारा। गद्य गात हा जाने पर महादेवी जा ने कहा—'हाय कितना पीटा है ! यह भी क्या नहा पीटती ?' जिज्जी ने महज नाव से कह दिया—'आदमी मारे भी तो औरत कस हाथ उठा सकती है?' 'और अगर तुमका बाबू इसी तरह मारें ता ? 'ना, ना, बाबू ऐसा नहा कर सकत ! आग्रसमाजा हा कर भी मेरे गाथ मत्पनारायण की कथा सुनत हैं, बडे अच्छे आदमा हैं। वार्ड-वार्ड आत्मा दुष्ट होते हैं।' 'तो फिर इसने दुष्ट के साथ गादो क्या की ? 'पगली गादो तो पर व बचे-बूड़े बरत हैं, यह बेचारी क्या करे ? अब वार्ड उपाय नहीं।'।

इनके बाद धार्मी दर तक दोना एक-दूसरे का देगती रही फिर जिज्जी ने जाने क्या दीप साँस ली और महादेवी जैसे अपने भीतर डूब गई ।

बप की सामर्थ्य से कहीं अधिक आपने सातवें बप से लेकर नवें बप तक व बीच म हिंदी, उर्दू, मराठी तथा चित्रकला का अप्रत्याशित ज्ञान प्राप्त कर लिया था । वज्रनाथा के पत्र ममस्यापुत्रि के साथ कहीं बाली में भी कविताएँ लिखने लगीं थी । इन्हें मन्कार की प्रवृत्ता के अनिश्चित और क्या कहा जा सकता है ? जिज्जी आर बाबूजी ने भी बेटी की अमावास्या प्रतिमा और बुद्धि की प्रगल्भा देखकर प्रालाह्न देने में कभी वार्ड चुक नहा की । आर्जोवन गिणा-मस्यात्रा से सम्बद्ध रहने व कारण बाबू जी बच्चा की प्रतिमा पहचानने में पारगम थे । पदार्थ गिणाई में पिताजी का प्रबुद्ध निरीक्षण-अंगोक्षण और उन्माह-बद्धन तथा गह-नाथ में माताजी की गिणा-दीणा ने मिलकर महादेवी जी का दाना क्षेपण म दण कर दिया था । महादेवी जी ने इसका उल्लेख भी किया है— एक आर माधनापुत्र, जालिक आर भाबुक माता आर दूमरी ओर सब प्रकार की सम्प्रदायिकता ने दूर कम निष्ठ और दार्शनिक पिता ने अपने-अपने मन्कार देकर मेरे जीवन का जमा विवाम गिणा उममें भाबुकता के कठोर परातल पर माधना एक व्यापक दार्शनिकता पर आर आस्तिकता एक सक्रिय किन्तु किमी बग या सम्प्रदाय म न बंधने वाली चेतना पर ही स्थित हो सकती थी ।

सम्भवत इमोलिए एक मजग मयाधवादी की तरह माचने-ममपने और आम्पावान जाणवादी की तरह काम करने की उनकी अपनी एक अलग प्रणाली है । तम-वय और मामञ्जस्य उनके ज्ञान के मूलाधार है । अनेक आन्वयजनक विष्णुनाथा का मज्ज मयाहाय, विभिन्न विज्ञानीय वर्गों से ममान सम्बन्ध, विभिन्न वयन आर विचार व व्यक्तित्व म एकत्रु मज्जानुक्ति, परम्पर विरोधी नाना प्रकार व बाधों का कर-तन की अद्भुत क्षमता मानिस की हाट और चिनगागिया का एक माय मया लगाने चाने का अन्वय पुन आरि उनकी सम्भवयोगिता व माक्षा है । काव्य म सम्मीर रहस्यवादी हाकर भी जीवन म इनकी सहज सरल तथा परानुभूतिगत, स्पष्ट और सिंगुल बूढ़ता हाने का रहस्य भी पहा है ।

अभी तक छोटे से मिलने विषय के लिये व बच्चा व माय बल्ह-नागाह तक भी उत्तर आता है । सुप्री का हाथी छीन लना चाहता है, सुप्री की मुठिया छिना लन का ताक म रहता है । मर्जोवन परिवार के बच्चे मिलने के विषय म इनके मया मज्ज रहन है । गिणा का इनका बडा मज्ज इनक पाय है कि मायद हा किमी आर व पाय हा । उनकी इन पवित्र पर ध्यान दीक्षण—'बह मिलने और पर उर प्रिय तथा अन् मानता है' ।

'क्षण में श्रीमू क्षण में काम' की लक्ष्म में भी बच्चा के माय जागती बाजी रहती है । मैंने देखा है कि निगागा जी की मानिक अस्म्या में कणाद हाकर आंगुआ के माय

उन्हें विदा देते समय भी वे गुप्त जी का स्वागत भुक्त हास के साथ करने में समर्थ हैं। पलका में अँगू और ओठा में हास माथ ही संजा रखने में वे अद्वितीय हैं।

नवा बप पूरा होने को हुआ। न बाबा ने गुडिया का ब्याह रचने की ठान ली। पके आम—बूढ़े होने के कारण व अपनी महामहिम महादेवी का विवाह अपनी आत्मा की छाया में ही कर देना चाहत थे। घर में उनके विरुद्ध कुछ कहने का किसी में साहस भी नहीं था। प्राचीन परिपाटी यही थी। बाबा की हठ उठाने में वेबल ब्याह करने जागामी कई वर्षों तक साइत न बनने के कारण उसी समय एक सप्ताह के लिए बालिका की विदा भी कर दी। राता चिल्लाती इस विदा की कातरवाणी कितनी हृदय विदारक रही होगी, यह महज ही अनुमय है।

समुद्राल ( बरेली के पास नवावगज नामक बस्वा ) पहुँचकर महादेवी जी ने जा उत्पात मचाया उसे समुद्राल वाले ही जानते हैं। न खाना, न पीना, न वालना न सुनना—केवल राना, राना, बस राना। जाँवें सज गईं ज्वर जा गया और बय का ताँता बँध गया। नयी बालिका बहू के स्वागत-समारोह का उत्साह पीछे पड़ गया और घर में एक आतक छा गया। पलत स्वसुर महान्य दूसरे दिन ही इन्हें वापस लौटा गये। स्वसुर लडकियाँ का स्कूली पढ़ाई के नितांत विराधी थे, इसलिये पढ़ाई का क्रम टूट गया। इस विधि का विधान ही कहना चाहिये कि माल भर के बाद ही स्वसुर का देहा त हा गया।

महादेवी जी के लिये अब केवल एक ही प्रगस्त पथ था—पढ़ाई का। विद्यानुरागी बाबू जी ने भी यही उचित समझा और जागे पढ़ने के लिये इन्हें ब्राय्मवेत कालेज, प्रयाग में भरती कर दिया। फिर क्या था घडल्लें से पढ़ाई जाय काव्य रचना चल पनी। मिडिल की परीक्षा आपने प्रथम श्रेणी में पास की और प्राप्त भर में प्रथम स्थान पाने के कारण राजकीय छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। उसी समय सौ छ दा का एक करण खण्डकाव्य भी लिखा।

महादेवी जी ने उस समय की माहित्यिक मनामूमि का उल्लेख किया है—'जब मैं अपनी विचित्र वृत्तिया तथा तुलिका और रगा का छात्कर विधिवत अध्ययन के लिये बाहर आयी, तब सामाजिक जागति के साथ राष्ट्रीय जागति की किरणें फैलने लगी थी अत उनमें प्रभावित होकर मैंने भी 'गृहारमया अनुरागमयी भारत जननी भारत माता', तरा उताह्व आरती माँ भारती' आदि जिन रचनाओं की सृष्टि की थी व विद्यालय के वातावरण में ही सा जाने के लिये लिखी गई थी। उनकी समाप्ति के साथ ही मेरी कविता का गीत भी समाप्त हो गया। उस समय की 'जबला', विधवा' आदि रचनायें 'आय महिला' एवं महिला जगत' पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई थी।

इसके बाद महादेवी जी की काव्य प्रवृत्ति उनकी मूल भाव धारा की ओर उन्मुख हो गई जिसमें व्यक्तित्वगत दुःख समष्टिगत गम्भीर धरना का रूप ग्रहण करने लगा और प्रत्यक्ष का स्थूल रूप एक मूख चेतना का आभास देने लगा। कहना नहीं होगा इस दिशा में मेरे मन का कही निश्राम मिला जा पणि गायक को बड़े धार गिर-उठकर अपने पता के

संभाल लेने पर भिन्ना हाथा'। उम भाव ही प्रथम रचना चाँद के प्रथम अंक म प्रकाशित हुई। तउ से रचना त्रम जवाध रूप से चरुता रहा और बहुत बाद म प्रकाशित 'नीहार' का अधिकाग उनके मंडिक होने के पहले ही लिखा जा चुका था।

मिडिल, दमर्बा, ग्यारहवाँ दर्जा पाग वरत-वरते कवि-सम्मेलना, बाद विवाद प्रति यागिता-म प्राप्त तमगा आर पुस्कारा से छात्रावाग का कमरा भर गया। उम समय की प्रचलित प्रसिद्ध पत्रिका-म कविताएँ प्रकाशित हाने लगी और चारा आर से कविता-म की माँग बढने लगी तथा काव्य ममता का ध्यान इम नवीन प्राञ्जल प्रतिभा की आर उल्लुबता मे आपतित होने लगा। आगय यह कि मिडिल से इटर तक की विद्याथिनी के रूप म ही आपका एक आदचय जनक स्याति मिल चुकी थी। म् '२३, '२४ म श्री इणाचन्द्र जागी का अपने जल्पमालीन चाँद के महबारी सपादक के रूप में महादेवी वर्मा क नाम से प्रकाशन क लिये आयी हुइ कविता का देम क आदचय क साथ जा मदेह हुआ था उसका बणन उहाने 'सगम' के महादेवा अक क अपने गव 'जीवन विजयिनी महादेवी' मे राबनता और विगता के साथ रिया है।

अपने कालेज जीवन म कालेज के बच्चा को नाटक खेलने के लिये आपो एक काव्य रूपक की भी रचना की थी, जिसमें पूर, भ्रमर, तिनली और वासु का पात्र बनाया गया था। न जाने क्या जागे आपने दम विधा का प्रथम नहीं दिया? कालेज की ममी छात्रा-म से आपका आरमीय मन्धष आर उनके सुप-दुप म सवाधिक लगाव सहेलिया की चर्चा का विषय बना रहा। छात्राएँ और अध्यापिकाएँ ममी समान रूप से आपका स्नेह और सम्मान देनी थी। श्री सुमद्राबुमारी चौहाण स प्रगाढ मत्री की नीव मी कालेज म ही पनी। कश्मिर पत जी का हिन्दू बाडिग हाउम क कवि-सम्मेलन म उसी समय इहाने पहली बार दगा। उत बडे साल और बंगमूपा के कारण उह लग्ना समयक पुरपा के बिन बैठने का ठिठाई पर मन-ही-मन अप्रगप्त मी हुइ।

बी० ए० पाग हाने ही गाँव का प्रश्न उपस्थित हुआ। इग बार उहाने गाप गला म दृढतापूर्वक, तितु गहज भाव स जिग्जा का वता दिया कि य विवाह का किमी भी स्थिति म स्वीकार करने का तयार नहा आर तब गाने की चर्चा ही व्यय है। जिग्जा का यह निदचय गुा क अत्यत पीला हुई और उहाने बहुत तरह के मसमाना भा चाहा पर महादेवा जी अपने निदचय पर अटल रल। वासु जी का भी बहुत दुग हुआ आर उहाने इह एक लम्बा पत्र लिखा जिनम अवाध बालिका क प्रति विवाह रूप म किये गये अचाय की मुक्त बट स क्षमा माँगे हुये स। मी लिखा कि यदि दूमग विवाह करने की इच्छा है ना ये इन्के साथ धम पत्रिवन करने का मी तयार है। इहाने अपने उत्तर म स्पष्ट कर दिया कि दूमरे विवाह की याग नहीं क विवाह करना ही गी चाहती। यदि पिछले श्रय की स्याति छाल क उनक पत्रमान निदचय का स्वीकार कर दिया जाय तो गला ही पत्र पिछले पाषा स मुक्त हा जायेंगे। बाइ गी ने दमे सहाय स्वीकार कर दिया। उगी समय से दम प्रगग का अण हा गया।

महादेवी-संस्मरण-प्रथ

उन दिना भारतीय नारी के लिये विवाह को इन प्रकार अस्वीकार कर देना कितना कठिन और विम्वयकारी था, कहने की बात नहीं। बचपन से ही महादेवी जी का यह स्वभाव रहा है कि उठाने जो अपने जीवन विकास के लिये उचित समझा सो किया, हठ और विद्रोह के साथ किया। मसाला का कोई भी प्रयोग या मय उसने विमुक्त नहीं कर सका।

विवाहित जीवन अस्वीकार करने की बात को लेकर कतिपय फायड-मन्को आर मन्निनिया ने, जिनका समय और माधना पर विश्वास नहीं है, महादेवी जी के प्रति मनमाने अनुमान आराग्न करत हुये उनके व्यक्तित्व आर कृतित्व में इसकी प्रतिक्रिया का प्रतिफल देने की हास्यास्पद चेष्टा की है। वैवाहिक जीवन अस्वीकार करने के मूल में भारतीय नारी की युग-युग से चली आती हुई वह दयनीय दशा जिसका उल्लेख अपने सामाजिक निबन्धा में महादेवी जी ने बार-बार आश्रय और क्षोभपूर्ण शब्दा में किया है तथा उनकी गहज वराम्य भावना है। बाढ़ मिथुणी बनने की इच्छा से भी इसका समर्थन जाना है। इसके अतिरिक्त पुरुष निरपेक्ष नारी-व्यक्तित्व की स्थापना का उनका जीवन-व्यापी उद्देश्य भी इसमें सक्रिय रहा हो ता आश्चर्य नहीं। अनुमान से अधिक महत्व स्वयं उनके स्पष्ट गमन को न देकर हम अपने को ही लाडिल करने हैं। उनके इस कथन पर ध्यान दीजिए— 'मेरे जीवन ने वही ग्रहण किया जो उसके अनुकूल था। कविता मय से बड़ा परिग्रह है, क्योंकि वह विश्व मात्र के प्रति स्नेह की स्वीकृति है।'

परिग्रही जीवन को अस्वीकार करके उठाने अपना काइ सोमिंत परिवार नहीं बनाया, पर उनका जमा विंगाल परिवार-पोषण सब के सब की बात नहीं। माय, हिण्ड, कुत्ते बिलियाँ गिलहरी, खरगा, मोर बबूतर ता उनके चिर सगी हैं ही लता-पादप पृष्ण आदि तक उनकी पारिवारिक ममता के समान अधिकारी हैं। आगतुक और यदि वह अनिधि हा तो उनके स्वागत की उनकी तामयना देखने लायक होती है। विंगाल साहित्यिक परिवार में से प्रयाग जाने वाले साहित्यिक के लिये ता उनका निवास घर ही सा है, पर असाहित्यिक के लिये भी उनका द्वार मुक्त रहता है। गुप्त जी ने ठीक ही कहा था— 'मेरी प्रयाग-यात्रा बवल मग्न-स्नान में पूरी नहीं जानी, उनका स्वया मायक बनाने के लिये मुझे सरस्वती ( महादेवी ) के दाना के लिये प्रयाग महिला विद्यापीठ जाना पडता है। मग्न में कुछ पूरु अभत भी चशाना पडता है पर सरस्वती के मदिन में कुछ प्रमाद मिणता है। मग्न हिन्दी के लिये उही का प्रमाद है।'

प्रयाग विद्वयविद्यालय से सरसूत में एम० ए० करने के पश्चात उन्होंने अपनी रचि के अनुकूल काय मग्न कर प्रयाग महिला विद्यापीठ का प्रधानाचार्या का भार ग्रहण किया और ताँद का निगन्व मपालन भी करने लगी। जब तक आपकी नीहार' और 'रमि' काय-कृतियाँ प्रकाशित हो चुका था।

या ता कविताया के साथ-साथ बचपन से ही आपने गद्य लिखना भी प्रारम्भ कर

दिया था और 'पत्नी प्रथा' पर लिखित निबंधों की प्रतिपादिता में उत्तर प्रदेश जिला विभाग में आपका मिटिल कक्षा में ही पुरस्कार भी मिला चुका था। 'भारतीय नारी' नामक नाटक भी वास्पवेट काल्ज आर विद्यापीठ में अभिनीत हो चुका था, कतिपय मसमरण भी लिखे जा चुके थे, परन्तु चाँद के सपादकीय के रूप में जिया गद्य अपना एक अलग महत्व रखता है। उर्षेणित प्राणिया में नारी-व्यग का स्थान शीघ्र है, इसमें हम भारतीय अन्त मित्र नहीं। महादेवी जी के लिये यह स्वाभाविक था कि हम वग के प्रति किये गये अत्याय और अत्याचार के विरुद्ध के आवाज उठाता। इन निबंधों में उन्होंने भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का बहूना गहराई के साथ एक समग्र गान्धी का भाँति विश्लेषण विवेचन किया है। आगे चल कर विचित परिवर्तन और परिवर्द्धन के माध्यम-माय ये निबंध 'शुभला की कहियाँ' नामक कृति में सम्प्रेत किये हैं।

महादेवी जी का रूप में जितनी परिचित और प्रसिद्ध हैं उतनी गद्यकार के रूप में नहीं, यद्यपि उनका गद्य भी उतना ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। काव्य की तरह उनका गद्य रचनाओं में साम्मीय, प्रौढता प्राञ्जलता और उनके व्यक्तित्व की महापता में समाहित और प्रवृष्ट और परिष्कृत है। अपने नारी विषयक निबंधों में महादेवी जी ने जिस शान्तिनारी दृष्टिकोण का परिचय दिया है, वह बड़े-से-बड़े समाज-सुधारकों में भी विरल है। सामाजिक नारी की स्थिति पर दिखाने का उद्देश्य है उन्हीं विषयों का व्याख्या और अवैध गताना की समझना पर भी अपने साहसी और निर्भीक विचार व्यक्त किये हैं। उनके गद्य और निष्पत्तय इनमें तटस्थ और सामाजिक चेतना में परिष्कृत हैं जो नर-नारी दोनों के लिये उपयोगी और व्यावहारिक हैं। यह ठीक है कि नारी की कष्ट स्थिति दूर कर उनका हृदय विह्वल हो गया और उनका विद्रोह उत्पन्न हो उठा, परन्तु उन्होंने कभी निष्पत्ता छाटकर सन्तुलन नहीं रखा—“अयोग्य के प्रति मैं स्वभाव में अग्रहिण्य हूँ, मनुष्य की प्रथा में उन्नत को गद्य स्वाभाविक है, परन्तु ध्वंस के लिये ध्वंस के मिहान्त में मेरा कभी विद्वान नहीं रहा। वस्तुतः नारी के प्रति उनकी संवेदनशील करणा जीवन के प्रगतिशील दान और कल्याण पर आधारित है। ऐसी स्थिति में बलिपुत्र के लिये करणा और बलि बर्नने वाले के प्रति आनाथ स्वाभाविक ही कहा जायगा।

अनेक व्यक्तियों का विचार है कि यदि कान्या का स्वावलम्बी बना देंगे तो वह विवाह हो न करेगी, जिससे दुराचार भी बढ़ेगा और गृहस्थ-धर्म में भी अग्रजकता उत्पन्न हो जायगी। परन्तु यह गूँज जात है कि स्वाभाविक रूप में विवाह में किया व्यक्ति के माहय का इच्छा प्रमाण होना चाहिए आर्थिक कठिनाइयों की विवशता नहीं।

उद्दान पर के शान्ति के प्रति 'आधुनिकता का विद्रोह का भी स्वकार नहीं किया और न पर के दायित्व तक ही सीमित रहने वाला परम्परा का ही माना। उनके मत में नारी का कल्याण पर भी है और पर के बाहर भी—'समाज का विकास किये गये शक्ति का अग्रगण्य का महानुक्ति के माध्यम समझकर उद्ये ऐसा करणा होगा, जिसे



पाकर वह अपने-आपका उपेक्षित न माने और जा उसका मातृत्व के गौरव का अक्षुण्ण रखते हुये भी उसे नवीन युग की मद्देसारी बनावना सक्ने में समर्थ हो।" उनका निष्कर्ष इन शब्दों में स्पष्ट है—“स्त्री में माँ का रूप ही सत्य, वास्तव्य ही शिव और ममता ही सुन्दर है। जब वह इन विनोयताओं के साथ पुरुष के जीवन में प्रतिष्ठित होती है तब उसका रिक्त स्थान भर लेना अमम्भव नहीं तो बरिष्ठ अवश्य हो जाता है।”

गद्य लिखने की प्रेरणा का स्पष्टीकरण करते हुये महादेवी जी ने लिखा है—‘मेरे सम्पूर्ण मानसिक विकास में उस युद्ध प्रसूत चिंतन का भी विनोय महत्व है जो जीवन की वाह्य व्यवस्थाओं के अध्ययन में गति पाता रहा है। अनेक सामाजिक रुढ़ियाँ मद्धे हुये निर्जोव समाजों का भार ढाले हुये और विविध विपत्तियों में साम लेने का भी अवकाश न पाते हुये जीवन के पान में मेरे भाव-जगत की वेदना को गहराई और जीवन का क्रिया दी है। उनके बौद्धिक विष्पण के लिये मैंने गद्य का स्वीकार किया था।’ उनके सामाजिक निष्पत्तियों में उनका यह मकल्प अत्यंत आज के साथ साथक और चरिताय हुआ है, इसमें मद्दह नहीं।

नीरजा उनके वाच्य-संचरण का तीमरा साधन है। इसमें अनुभूति के उत्कृष्ट और वाच्यमय मनोरमता के साथ ही गीत काय अपने चरम विकास का स्थापना देता है। गीतों की दृष्टि में नीरजा हिन्दी की श्रेष्ठतम रचना है। छायावाद के दुवासा आलाचक आचार्य गुप्त ने भी इनके गीतों की मफल्ता का अनुभव माना है।

चायी कृति साध्यगीत में आत्मा-परमात्मा तथा प्रकृति और विश्व के बीच रागात्मक सम्बन्ध का आवलन करते हुये महादेवी जी का वाच्य समात्म भाव के उच्चतम धरणा पर प्रतिष्ठित न जाता है। गृहस्थवादी वाच्य की यही चरम मफल्ता है। उन्होंने स्वयं भी लिखा है नीरजा और साध्यगीत मेरी उच्च मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सर्वोच्च जिमस अनायाम ही मेरा हृदय सुगन्ध में सामञ्जस्य का अनुभव करने लगा।

साध्यगीत के प्रकाशन के साथ त्रयित्री का चित्रवर्ती रूप भी सामने आया। इस प्रकार साध्यगीत वाच्य, संगीत और चित्र के समन्वित स्वरूप में जाला रित है।

उनकी पाँचवी वाच्य-कृति ‘दीपंगिता’ को वाच्यमय चित्र तथा चित्रमय वाच्य अथवा चित्रगीत की सना दी जा सकती है। प्रत्येक गीत की पद्यभूमि के रूप में एक चित्र अस्तित्व में जा वाच्यत्व के चारों ओर म सहज ही समर्थ है। वाच्य और भाव दोनों दृष्टियों से दीपंगिता अत्यंत प्रीति और अपने ढंग का अकेला वाच्य कृति है। ‘दीपंगिता’ दग्ने के पञ्चान ही निराला जी ने इनके विषय में लिखा था—

हिन्दी के विंगाल मन्दिर में वीणा-वाणी,  
स्मृति धनता रचना की प्रतिमा कल्याणी।